स्वाध्याय – मोक्ष का मार्ग

ईश्वर के विभिन्न अवतारों द्वारा वेद, पुराण, गीता, रामायण आदि धर्मशास्त्रों में अपना निवास बताया है एवं इनके अध्ययन से प्राप्त होने वाले लाभों एवं पुण्यों का विस्तार से वर्णन भी किया है। इससे स्वाध्याय का महत्व स्वतः सिद्व हो जाता है। स्वाध्याय का सम्पूर्ण महत्व तो बताना किसी भी व्यक्ति के लिए असम्भव है, कुछ लाभ स्वाध्याय के बताए जा रहे है। जिनका उद्वेश्य है कि अधिक से अधिक लोग स्वाध्याय को अपने दैनिक जीवन में अपना कर अपने में सदगुणों का विकास एवं ज्ञान में वृद्वि करें एवं अपनी उपासना के परमलक्ष्य को शीघ्र प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बनावें ।

सदगुणों के विकास का साधन स्वाध्याय –शिक्षाप्रद एवं धार्मिक पूस्तको के अध्ययन से मनुष्य में दुर्गुणों का नाश होकर सभी सदगुणों का विकास होता है । वास्तव में सदगुणों से युक्त मनुष्य ही अपने जीवन में उन्नति कर अपने वास्तविक लक्ष्य एवं परमात्मा को भी प्राप्त कर सकता है।

सभी उपासनाओ का प्रेरक एवं मार्गदर्शक स्वाध्याय – चाहे कर्मयोग हो , भक्ति योग हो अथवा ज्ञानयोग हो सभी उपासना पद्वतियों में स्वाध्याय प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गीता की पुस्तक हाथ में लेकर देशभक्त हॅसते – हॅसते शहीद हो गए, भक्त भी जब धार्मिक पुस्तक पढता है तो आनन्द विभोर हो उठता है । विभिन्न धार्मिक एवं संतों की पुस्तकों के माध्यम से योगी जन भी अपनी शंकाओं का समाधान एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर अपनी उपासना में प्रगति करते हैं। योग वशिष्ट जो कि योग के क्षैत्र में एक महत्वपूर्ण पुस्तक है, में भी कई जगह स्वाध्याय को ध्यान एवं योग के क्षेत्र में प्रगति का एक महत्वपूर्ण साधन माना है।लोक मान्य तिलक ने तो गीता की पुस्तक पढते हुए बडा ही कष्टप्रद आपरेशन करवा लिया था जो इस बात का प्रतीक है कि पुस्तकों के अध्ययन में ऐसी तल्लीनता प्राप्त हो जाती है जो लंबी योग साधनाओं से भी प्राप्त नहीं होती है ।

सभी रोगों की दवा स्वाध्याय–लगभग सभी आम शारीरिक रोगों जैसे ह्रदय रोग, ब्लडप्रेशर, डाईबिटीज आदि में मानसिक तनाव को ही प्रमुख कारण माना गया है। वर्तमान शिक्षापद्वति, बढती प्रतिस्पर्घा की भावना, एवं आधुनिक जीवनशैली भी मानसिक रोगों में वृद्वि का एक प्रमुख कारण है। शिक्षाप्रद एवं धार्मिक पुस्तकों के स्वाध्याय से मानसिक शांति, ह्रदय गति का संतुलित होना, जीवन की समस्याओं से बहादुरी से लडने की प्रेरणा , ईश्वर में विश्वास आदि बातों से मानसिक तनाव को समाप्त करने में काफी योगदान प्राप्त होता है ।

साम्प्रदायिक सदभाव के विकास का माध्यम स्वाध्याय – आज विभिन्न धर्मो के अनुयायी अपने – अपने धर्म को श्रेष्ठ मानकर एवं दूसरों के धर्मों को नीचा मानकर आपस में लड रहें है । यदि सभी धर्मों का अध्ययन किया जाए तो यह भ्रातिं दूर हो जाती है एवं एक दूसरे धर्म के प्रति आदर भाव विकसित होता है । उदाहरणार्थ यदि कोई भी मुस्लिम भाई जिसने कभी भी कुरान का एक बार भी मन से अध्ययन किया हो वह दूसरे धर्म के अनुयायी को जान से मारना तो दूर एक थप्पड भी मारना पसन्द नहीं करेगा । कुरान शरीफ में दया ,क्षमा , ईमानदारी , आदि अनेक गुणों पर बल दिया गया है । क्योंकि मुस्लिम समुदाय का एक बडा वर्ग अशिक्षित है और उन्हें धर्म के नाम पर जो भी सिखा दिया जाता है वे उस पर विश्वास कर उसे अमल में लातें है ।यही हाल हिन्दू एवं अन्य धर्मो का भी है जहां कटटरपंथी धर्म के नाम पर कटुता का वातावरण पैदा कर रहें है, शिक्षा के प्रसार एवं स्वाध्याय के माध्यम से यह समस्या दूर हो सकती है ।

स्वाध्याय को आम जनता के दैनिक जीवन में शामिल करने की आवश्यकता–आप किसी भी समस्या या मानसिक तनाव में हो, तो किसी भी शिक्षाप्रद या धार्मिक पुस्तक का अध्ययन आपको तुरन्त मानसिक शान्ति एवं उस समस्या से मुकाबला करने की प्रेरणा देगा । गीता का निष्काम कर्मयोग हो या भगवत शरणागति ये सभी उपाय मनुष्य को सभी चिन्ताओं से मुक्त कर देतें है । आवश्यकता इस बात की है कि स्वाध्याय आम जनता को सुलभ हो एवं उसका उनके दैनिक जीवन में उपयोग हो ।

शिक्षाप्रद, धार्मिक एवं दुर्लभ पुस्तकों एवं ग्रंथों का कम्प्युटरीकरण कर उन्हें सुरक्षित करना एवं डी.वी.डी. या इन्टरनेट के माध्यम से लोगों को पढने एवं डाउनलोड करने के लिए उपलब्ध करवाना – आज लोगों के पास पुस्तकों को रखने के लिए स्थान का अभाव है । पुरानी पुस्तकों को चूहों एवं दीमक से बचाना भी एक समस्या है , घर पर पढने के लिए समय का भी अभाव है । चूंकि कम्प्यूटरों का घर, दुकान, एवं ऑफिसों में प्रयोग बढ रहा है । सैंकडो पुस्तकें बहुत ही कम मैमोरी में डाउनलोड हो जाती है, अपना फालतू समय जो घर ऑफिस या दुकान में व्यर्थ की बातों में चला जाता है उसमें कुछ स्वाध्याय प्रतिदिन अवश्य किया जा सकता है। वैसे भी कहा गया है कि ' एक घडी आधी धडी आधी में पुनि आधि, तुलसी संगति साधु कि हरे कोटि अपराध ' स्वाध्याय भी सतसंग का ही एक रूप है । सतसंग में व्यक्ति के माध्यम से व्यक्ति मार्गदर्शन प्राप्त करता है, स्वाध्याय में पुस्तक माध्यम होती है । स्वाध्याय करना घर बैठे सतसंग करना ही है।

दुर्लभ ग्रन्थ भी कम्प्युटरीकरण के माध्यम से आने वाली पीढी के लिए सुरक्षित रह सकेंगे।कुछ लोगों द्वारा वेद, पुराण , गीता , रामायण, एवं अन्य ग्रन्थों एवं उत्कृष्ट साहित्यिक सामग्री इन्टरनेट पर लोगों के पढनें एवं डाउनलोड करने के लिए विभिन्न धार्मिक एवं अन्य साईटों द्वारा उपलब्ध कराए गए है मैं उन्हें बारम्बार प्रणाम करता हू वे वास्तव में साधूवाद के पात्र है । अभी भी उपनिषद , विभिन्न सहिंताऍं जो कि लुप्तप्राय हो गई है एवं अन्य दुर्लभग्रन्थों का कम्प्युटरीकरण का कार्य अभी बाकी है । मेरा विद्वान लोगों से भी अनुरोध है कि यदि उनके पास कोई अच्छा एवं दुर्लभ ग्रन्थ या पुस्तक है तो उसे स्केन करा कर या अन्य माध्यम से कम्प्यूटरीकरण किया जाए फिर सी.डी., डी.वी.डी.या इन्टरनेट के माध्यम से लागों को उपलब्ध कराया जावे ।

स्वाध्याय का महत्व विभिन्न ग्रंथों में एवं विद्वानों की राय में–

' जितना पुण्य धन–धान्य से पूर्ण इस पृथ्वी को दान देने से मिलता है उसका तीन गुणा पुण्य तथा उससे भी अधिक पुण्य स्वाध्याय करने वाले को मिलता है। '

' ब्राह्मण का स्वाभाविक कर्म स्वाध्याय है, जिसदिन वह स्वाध्याय नहीं करता उसी दिन वह ब्राह्मणत्व से पतित हो जाता है '

शतपथ ब्राह्मण

' अच्छी पुस्तकें जीवन्त देव प्रतिमाएं है जो उपयोग करने पर तुरन्त प्रकाश एवं उल्लास प्रदान करती है '

' स्वाध्याय करना धर बैठे सतसंग करना ही है। सतसंग में माध्यम व्यक्ति होता है, स्वाध्याय में माध्यम पुस्तक होती है। '

आचार्य श्री राम शर्मा

' वेद शास्त्रों में श्रम का सबसे बडा महत्व है । हर एक को कुंछ न कुछ श्रम नित्य प्रति करना ही चाहिए, इस श्रम के क्षेत्र में स्वाध्याय ही सबसे बडा श्रम है। '

' स्वाध्याय द्वारा परमात्मा में योग करना सीखा जाता है और समस्वरूप योग से स्वाध्याय किया जाता है योग पूर्वक स्वाध्याय से ही परमात्मा का साक्षात्कार हो सकता है अपने आप को जानने के लिए स्वाध्याय से बढ कर अन्य कोई उपाय नहीं है। यहां तक कि इससे बढकर कोई पुण्य भी नहीं है । '

योग भाष्यकार व्यास

' जो सदा मन में सब प्राणियों पर प्रसन्न रहते है और मध्याह्न काल तक धर्म ग्रंथों का स्वाध्याय करते है उनकी मैं सदा पूजा करता हूं '

श्री कृष्ण

' हे मनुष्यों , उम्र बीत जाने पर भी यदि विद्या प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो तो तुम निश्चय ही बुद्विमान हो । विद्या इस जीवन में फलवती न हुई तो भी दूसरे जन्मों में वह आपके लिए सुलभ बन जाएगी '

' स्वाध्याय युक्त साधना से ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है । '

महर्षि व्यास

' इस संसार में ज्ञान से बढकर कोई श्रेष्ठ पदार्थ नहीं है । '

गीता

' स्वाध्याय से बढकर आनंद कुछ नहीं , मुझे नरक में भेज दो वहॉ भी स्वर्ग बना दूंगा , यदि मेरे पास अच्छी पुस्तकें हों '

महात्मा गांधी

' अविद्या का आधा भाग सतसंग से नष्ट हो जाता है , चौथाई भाग शास्त्रों के स्वाध्याय से एवं शेष चौथाई स्वंय के पुरूषार्थ सें नष्ट होता है '

योगवासिष्ठ